EDUZONE: International Peer Reviewed/Refereed Multidisciplinary Journal (EIPRMJ), ISSN: 2319-5045
Volume 15, Issue 1, January - June, 2026, Available online at: www.eduzonejournal.com

कैप्टन लक्ष्मी सहगल राजनीतिक जीवन एवं वामपंथी विचारधारा का अध्ययन

पूजा[1], डा० रेखा रानी[2]

शोधार्थी, इतिहास विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक (हरियाणा) — 124021
सहायक प्रोफेसर, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक (हरियाणा) — 124021

सारांश

प्रस्तुत शोध-पत्र कैप्टन लक्ष्मी सहगल के राजनीतिक जीवन एवं वामपंथी विचारधारा का एक व्यवस्थित अध्ययन प्रस्तुत करता है। आजाद हिन्द फौज की प्रसिद्ध सेनानी लक्ष्मी सहगल का योगदान स्वतंत्रता संग्राम तक सीमित नहीं था; स्वतंत्रता-पश्चात उन्होंने भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) के माध्यम से सामाजिक न्याय, महिला अधिकार एवं श्रमिक कल्याण के लिए आजीवन संघर्ष किया। यह शोध-पत्र उनकी वैचारिक यात्रा, मार्क्सवादी विचारधारा से जुड़ाव, संसदीय एवं दलीय राजनीतिक जीवन, सामाजिक संघर्ष, धर्मनिरपेक्ष आदर्श तथा राजनीतिक विरासत का विश्लेषण करता है। अध्ययन यह दर्शाता है कि उनका राजनीतिक जीवन आजाद हिन्द फौज के समतावादी आदर्शों की एक तार्किक निरंतरता था एवं यह सिद्धांतनिष्ठ तथा सेवा-प्रेरित राजनीति का एक आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करता है।

मुख्य शब्द : कैप्टन लक्ष्मी सहगल, वामपंथी विचारधारा, मार्क्सवाद, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी), सामाजिक न्याय, धर्मनिरपेक्षता, नारी सशक्तीकरण, आजाद हिन्द फौज।

1. प्रस्तावना

कैप्टन लक्ष्मी सहगल भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की एक प्रमुख विभूति थीं, किंतु उनका योगदान स्वतंत्रता संग्राम तक सीमित नहीं था। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात उन्होंने एक लंबा, सक्रिय एवं प्रतिबद्ध राजनीतिक जीवन व्यतीत किया। प्रस्तुत शोध-पत्र कैप्टन लक्ष्मी सहगल के इसी राजनीतिक जीवन एवं उनकी वामपंथी विचारधारा का एक व्यवस्थित अध्ययन प्रस्तुत करता है।

लक्ष्मी सहगल का राजनीतिक जीवन सत्ता-प्राप्ति की महत्वाकांक्षा से नहीं, अपितु सामाजिक परिवर्तन एवं वंचितों की सेवा की भावना से प्रेरित था। उन्होंने भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) के माध्यम से सामाजिक न्याय, महिला अधिकार एवं श्रमिक कल्याण के लिए आजीवन संघर्ष किया। उनका राजनीतिक जीवन आजाद हिन्द फौज के समतावादी आदर्शों की एक तार्किक निरंतरता था।

प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य कैप्टन लक्ष्मी सहगल के राजनीतिक जीवन एवं वामपंथी विचारधारा के विविध पक्षों का विश्लेषण करना है। इसमें उनकी वैचारिक यात्रा, मार्क्सवादी विचारधारा से उनका जुड़ाव, उनका संसदीय एवं दलीय राजनीतिक जीवन, उनका सामाजिक संघर्ष, तथा उनकी राजनीतिक विरासत का अध्ययन सम्मिलित है।

1.1 शोध-पत्र का उद्देश्य एवं पद्धति

प्रस्तुत शोध-पत्र ऐतिहासिक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है। इसमें प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों का समन्वित उपयोग किया गया है। प्राथमिक स्रोतों में कैप्टन लक्ष्मी सहगल की आत्मकथा एवं समकालीन दस्तावेज सम्मिलित हैं, जबकि द्वितीयक स्रोतों में गीता रामास्वामी एवं अन्य विद्वानों के अध्ययन सम्मिलित हैं।

इस शोध-पत्र का प्रमुख उद्देश्य कैप्टन लक्ष्मी सहगल के राजनीतिक जीवन को उनके संपूर्ण जीवन-संघर्ष के संदर्भ में समझना है। यह शोध-पत्र इस प्रश्न का उत्तर खोजने का प्रयास करता है कि उनकी वामपंथी विचारधारा का स्रोत क्या था एवं उनका राजनीतिक जीवन आजाद हिन्द फौज के आदर्शों से किस प्रकार जुड़ा था।

1.2 विषय का महत्व

कैप्टन लक्ष्मी सहगल के राजनीतिक जीवन का अध्ययन अनेक दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। प्रथम, यह उनके बहुआयामी व्यक्तित्व के एक महत्वपूर्ण किंतु अपेक्षाकृत उपेक्षित पक्ष पर प्रकाश डालता है। द्वितीय, यह भारतीय वामपंथी राजनीति एवं नारी राजनीतिक भागीदारी के अध्ययन में योगदान देता है। तृतीय, यह सिद्धांतनिष्ठ एवं सेवा-प्रेरित राजनीति का एक आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करता है।

1.3 शोध-प्रश्न एवं परिकल्पना

प्रस्तुत शोध-पत्र अनेक महत्वपूर्ण शोध-प्रश्नों का उत्तर खोजने का प्रयास करता है। कैप्टन लक्ष्मी सहगल की वामपंथी विचारधारा का स्रोत क्या था? उनका राजनीतिक जीवन आजाद हिन्द फौज के आदर्शों से किस प्रकार जुड़ा था? उनके राजनीतिक जीवन की प्रमुख विशेषताएँ क्या थीं? इन प्रश्नों के उत्तर इस शोध-पत्र में खोजे गए हैं।

इस शोध-पत्र की मूल परिकल्पना यह है कि कैप्टन लक्ष्मी सहगल का राजनीतिक जीवन एवं वामपंथी विचारधारा उनके संपूर्ण जीवन-संघर्ष की एक सुसंगत निरंतरता थी। उनका राजनीतिक जीवन किसी आकस्मिक परिवर्तन का परिणाम नहीं, अपितु उनके दीर्घकालिक वैचारिक विकास की एक तार्किक परिणति था।

यह शोध-पत्र इस परिकल्पना का परीक्षण उनके जीवन के विभिन्न पक्षों के विश्लेषण के माध्यम से करता है। इससे उनके राजनीतिक जीवन एवं वामपंथी विचारधारा का एक समग्र एवं सुसंगत चित्र प्रस्तुत होता है।

2. वैचारिक पृष्ठभूमि एवं यात्रा

2.1 प्रारंभिक वैचारिक प्रभाव

कैप्टन लक्ष्मी सहगल की वैचारिक यात्रा का आरंभ उनके प्रारंभिक जीवन में ही हो गया था। उनका परिवार एक प्रगतिशील एवं सामाजिक रूप से जागरूक परिवार था। उनकी माता अम्मू स्वामीनाथन एक प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी एवं समाजसेविका थीं, जिनका लक्ष्मी पर गहरा प्रभाव था।[1]

बाल्यकाल से ही लक्ष्मी में सामाजिक असमानता एवं भेदभाव के प्रति गहरी संवेदनशीलता थी। उन्होंने जातिगत भेदभाव एवं सामाजिक अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाई। यह प्रारंभिक सामाजिक चेतना उनकी परवर्ती वामपंथी विचारधारा का आधार बनी।

चिकित्सा शिक्षा के दौरान लक्ष्मी ने समाज की कठोर वास्तविकताओं—गरीबी, कुपोषण एवं शोषण—को निकट से देखा। इस अनुभव ने उनके मन में सामाजिक असमानता के प्रति गहरा आक्रोश एवं वंचितों की सेवा का संकल्प उत्पन्न किया।

2.2 गांधीवाद से क्रांतिकारी राष्ट्रवाद तक

लक्ष्मी की प्रारंभिक वैचारिक यात्रा गांधीवादी आदर्शवाद से आरंभ हुई। बाल्यकाल में वे गांधीजी के स्वदेशी आंदोलन एवं सामाजिक सुधार के विचारों से प्रभावित हुईं। उन्होंने विदेशी वस्त्रों का परित्याग कर खादी अपनाई एवं अस्पृश्यता के विरुद्ध संघर्ष का समर्थन किया।[2]

गांधीवादी आदर्शवाद से लक्ष्मी की वैचारिक यात्रा क्रांतिकारी राष्ट्रवाद की ओर अग्रसर हुई। भगत सिंह एवं अन्य क्रांतिकारियों के बलिदान ने उन्हें प्रभावित किया। आगे चलकर आजाद हिन्द फौज में सशस्त्र संघर्ष का मार्ग चुनना इसी क्रांतिकारी विचारधारा का परिणाम था।

इस वैचारिक यात्रा में लक्ष्मी का मूल सूत्र—सामाजिक न्याय एवं वंचितों की सेवा—अपरिवर्तित रहा। केवल इस लक्ष्य को प्राप्त करने के मार्ग के संबंध में उनके विचार विकसित होते रहे। यह वैचारिक निरंतरता उनके व्यक्तित्व की एक प्रमुख विशेषता थी।

2.3 आजाद हिन्द फौज का वैचारिक प्रभाव

आजाद हिन्द फौज के अनुभव का लक्ष्मी की विचारधारा पर गहरा प्रभाव पड़ा। नेताजी सुभाष चंद्र बोस की समाजवादी एवं समतावादी विचारधारा ने उनके विचारों को आकार दिया। आजाद हिन्द फौज के धर्मनिरपेक्ष एवं समतावादी आदर्श उनके स्थायी मूल्य बने।[3]

नेताजी का दृष्टिकोण था कि राजनीतिक स्वतंत्रता पर्याप्त नहीं है। वास्तविक स्वतंत्रता के लिए सामाजिक एवं आर्थिक मुक्ति भी आवश्यक है। यह दृष्टिकोण लक्ष्मी की परवर्ती वामपंथी विचारधारा का एक महत्वपूर्ण आधार बना।

आजाद हिन्द फौज में लक्ष्मी ने समानता एवं समतावाद को व्यवहार में देखा। जाति, धर्म एवं लिंग के भेदभाव से मुक्त एक समतावादी संगठन के अनुभव ने उनके समाजवादी आदर्शों को सुदृढ़ किया। यह अनुभव उनकी वामपंथी विचारधारा की प्रत्यक्ष पूर्वपीठिका था।

2.4 बौद्धिक एवं सामाजिक प्रभाव

कैप्टन लक्ष्मी सहगल के बौद्धिक विकास पर अनेक प्रभाव पड़े। दक्षिण भारत की प्रगतिशील सामाजिक परंपरा, उनके परिवार का बौद्धिक वातावरण एवं उनकी व्यापक शिक्षा—इन सभी ने उनकी विचारधारा को आकार दिया।[4]

---

[1]लक्ष्मी सहगल, ए रेवोल्यूशनरी लाइफ, काली फॉर वीमेन, नई दिल्ली, 1997, पृष्ठ 31।
[2]गीता रामास्वामी, कैप्टन लक्ष्मी: ए लाइफ, नवयाना, हैदराबाद, 2013, पृष्ठ 82।
[3]सुगाता बोस, हिज़ मैजेस्टीज़ ऑपोनेंट, हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, कैम्ब्रिज, 2011, पृष्ठ 290।

लक्ष्मी ने राष्ट्रीय एवं सामाजिक मुद्दों पर गहन अध्ययन किया एवं विभिन्न विचारधाराओं से परिचित हुईं। यह व्यापक बौद्धिक विकास उनकी परवर्ती वैचारिक परिपक्वता का आधार बना।

लक्ष्मी का बौद्धिक विकास उनके व्यावहारिक अनुभवों से भी जुड़ा था। चिकित्सा, सैन्य सेवा एवं सामाजिक कार्य के अनुभवों ने उनकी विचारधारा को व्यावहारिक आधार प्रदान किया। यह सिद्धांत एवं व्यवहार का समन्वय उनकी विचारधारा की विशेषता थी।

2.5 विचारधारा एवं व्यक्तिगत अनुभव

कैप्टन लक्ष्मी सहगल की विचारधारा उनके व्यक्तिगत अनुभवों से गहराई से जुड़ी थी। चिकित्सा, सैन्य सेवा एवं सामाजिक कार्य के अनुभवों ने उनकी विचारधारा को व्यावहारिक आधार प्रदान किया।[5]

लक्ष्मी ने अपने अनुभवों से यह सीखा कि सामाजिक असमानता एवं शोषण की जड़ें आर्थिक एवं सामाजिक संरचना में निहित हैं। इस समझ ने उनकी वामपंथी विचारधारा को सुदृढ़ किया।

इस प्रकार लक्ष्मी की विचारधारा सिद्धांत एवं अनुभव का एक समन्वय थी। यह केवल पुस्तकीय ज्ञान पर नहीं, अपितु जीवंत अनुभवों पर आधारित थी। यह व्यावहारिक आधार उनकी विचारधारा की एक विशेषता थी।

3. मार्क्सवादी विचारधारा से जुड़ाव

3.1 कम्युनिस्ट पार्टी में प्रवेश

1971 में कैप्टन लक्ष्मी सहगल औपचारिक रूप से भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) में सम्मिलित हुईं। यह उनकी दीर्घकालिक वैचारिक यात्रा का एक स्वाभाविक परिणाम था। बाल्यकाल से ही सामाजिक समानता एवं न्याय में उनकी गहरी आस्था थी।[6]

मार्क्सवादी विचारधारा ने लक्ष्मी को सामाजिक एवं आर्थिक शोषण के विरुद्ध संघर्ष का एक व्यवस्थित वैचारिक आधार प्रदान किया। उन्होंने मार्क्सवाद में सामाजिक असमानता के विश्लेषण एवं उसके समाधान का एक प्रभावी सिद्धांत पाया।

लक्ष्मी का कम्युनिस्ट पार्टी में प्रवेश किसी आकस्मिक परिवर्तन का परिणाम नहीं था। यह उनके दीर्घकालिक वैचारिक विकास की एक तार्किक परिणति थी। उनकी सामाजिक चेतना एवं समतावादी आदर्श स्वाभाविक रूप से मार्क्सवादी विचारधारा की ओर अग्रसर हुए।

3.2 लक्ष्मी का व्यावहारिक मार्क्सवाद

कैप्टन लक्ष्मी सहगल का मार्क्सवाद किसी कठोर सैद्धांतिक ढाँचे तक सीमित नहीं था। उनका मार्क्सवाद मानवीय करुणा एवं व्यावहारिक सेवा से अनुप्राणित था। उन्होंने मार्क्सवाद को केवल एक सिद्धांत नहीं, अपितु सामाजिक परिवर्तन का एक व्यावहारिक माध्यम माना।[7]

लक्ष्मी का मार्क्सवाद उनके चिकित्सकीय एवं सामाजिक कार्यों में अभिव्यक्त हुआ। उन्होंने वंचितों, श्रमिकों एवं महिलाओं की निःस्वार्थ सेवा की। यह व्यावहारिक मार्क्सवाद उनके जीवन की एक विशेषता थी।

लक्ष्मी के लिए मार्क्सवाद सामाजिक न्याय की प्राप्ति का एक साधन था, न कि एक कठोर हठधर्मिता। उन्होंने मार्क्सवादी सिद्धांतों को भारतीय परिस्थितियों के संदर्भ में व्यावहारिक रूप से लागू किया। यह व्यावहारिक एवं मानवीय दृष्टिकोण उनके मार्क्सवाद की विशेषता थी।

3.3 वैचारिक निरंतरता

लक्ष्मी का मार्क्सवाद से जुड़ाव आजाद हिन्द फौज के आदर्शों की एक तार्किक निरंतरता था। नेताजी की समाजवादी विचारधारा एवं मार्क्सवाद के मध्य एक वैचारिक संबंध था। दोनों सामाजिक एवं आर्थिक समानता के आदर्श पर आधारित थे।[8]

इस प्रकार लक्ष्मी की वैचारिक यात्रा में एक उल्लेखनीय निरंतरता थी। गांधीवाद, क्रांतिकारी राष्ट्रवाद, आजाद हिन्द फौज का समाजवाद एवं मार्क्सवाद—ये सभी एक साझा सूत्र से जुड़े थे। यह सूत्र सामाजिक न्याय एवं समानता का आदर्श था।

लक्ष्मी की यह वैचारिक निरंतरता उनके खुले एवं विकासशील दृष्टिकोण का प्रमाण थी। उन्होंने विभिन्न विचारधाराओं से प्रेरणा ली, किंतु अपने मूल आदर्शों पर अडिग रहीं। यह वैचारिक परिपक्वता उनके व्यक्तित्व की एक विशेषता थी।

---

[4]गीता रामास्वामी, कैप्टन लक्ष्मी: ए लाइफ, नवयाना, हैदराबाद, 2013, पृष्ठ 32।
[5]गीता रामास्वामी, कैप्टन लक्ष्मी: ए लाइफ, नवयाना, हैदराबाद, 2013, पृष्ठ 88।
[6]लक्ष्मी सहगल, ए रेवोल्यूशनरी लाइफ, काली फॉर वीमेन, नई दिल्ली, 1997, पृष्ठ 215।
[7]गीता रामास्वामी, कैप्टन लक्ष्मी: ए लाइफ, नवयाना, हैदराबाद, 2013, पृष्ठ 165।
[8]सुगाता बोस, हिज़ मैजेस्टीज़ ऑपोनेंट, हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, कैम्ब्रिज, 2011, पृष्ठ 295।

3.4 मार्क्सवाद की भारतीय व्याख्या

कैप्टन लक्ष्मी सहगल ने मार्क्सवाद की एक भारतीय व्याख्या प्रस्तुत की। उन्होंने मार्क्सवादी सिद्धांतों को भारतीय सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियों के संदर्भ में व्यावहारिक रूप से लागू किया।[9]

लक्ष्मी का मार्क्सवाद भारतीय वास्तविकताओं—जातिगत असमानता, साम्प्रदायिकता एवं लैंगिक भेदभाव—को संबोधित करता था। उन्होंने इन भारतीय समस्याओं को मार्क्सवादी वर्ग-विश्लेषण के साथ जोड़ा।

यह भारतीय व्याख्या लक्ष्मी के मार्क्सवाद को एक विशिष्टता प्रदान करती थी। उनका मार्क्सवाद यंत्रवत नहीं, अपितु भारतीय परिस्थितियों के प्रति संवेदनशील एवं व्यावहारिक था। यह संवेदनशीलता उनकी विचारधारा की एक प्रमुख विशेषता थी।

3.5 मार्क्सवाद एवं मानवतावाद

कैप्टन लक्ष्मी सहगल के मार्क्सवाद में एक गहन मानवतावादी आयाम था। उनका मार्क्सवाद केवल आर्थिक वर्ग-विश्लेषण तक सीमित नहीं था, अपितु यह मानवीय करुणा एवं सेवा से अनुप्राणित था।[10]

लक्ष्मी के लिए मार्क्सवाद का अंतिम लक्ष्य मानवता की मुक्ति एवं कल्याण था। उन्होंने मार्क्सवादी सिद्धांतों को मानवीय करुणा के साथ जोड़ा। यह मानवतावादी आयाम उनके मार्क्सवाद की एक विशेषता थी।

इस प्रकार लक्ष्मी का मार्क्सवाद एक मानवीय एवं करुणामय मार्क्सवाद था। यह सिद्धांत एवं करुणा, वर्ग-संघर्ष एवं मानवीय सेवा का एक समन्वय था। यह समन्वय उनकी वैचारिक विशिष्टता का प्रमाण था।

4. संसदीय एवं दलीय राजनीतिक जीवन

4.1 राज्य सभा सदस्यता

कैप्टन लक्ष्मी सहगल राज्य सभा की सदस्य भी रहीं, जहाँ उन्होंने सामाजिक न्याय एवं वंचित वर्गों के मुद्दों को प्रमुखता से उठाया। उन्होंने श्रमिकों, किसानों एवं महिलाओं के अधिकारों के लिए संसद में आवाज उठाई।

संसद में लक्ष्मी ने अपने अनुभव एवं विशेषज्ञता का उपयोग सामाजिक मुद्दों के समाधान के लिए किया। एक चिकित्सक के रूप में उन्होंने जनस्वास्थ्य के मुद्दों पर विशेष ध्यान दिया एवं महिलाओं तथा बच्चों के स्वास्थ्य के लिए नीतिगत सुझाव दिए।

लक्ष्मी का संसदीय योगदान उनकी सामाजिक प्रतिबद्धता का प्रमाण था। उन्होंने संसद को वंचित वर्गों की आवाज उठाने का एक मंच बनाया। उनका राजनीतिक जीवन व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा से नहीं, अपितु सामाजिक सेवा की भावना से प्रेरित था।

4.2 दलीय राजनीति में योगदान

कैप्टन लक्ष्मी सहगल ने भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) में एक प्रमुख भूमिका निभाई। उन्होंने पार्टी के विभिन्न कार्यक्रमों एवं आंदोलनों में सक्रिय भागीदारी की। उनका योगदान पार्टी को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण था।[11]

लक्ष्मी ने दलीय राजनीति को सामाजिक परिवर्तन का एक माध्यम माना। उन्होंने पार्टी के माध्यम से वंचितों, श्रमिकों एवं महिलाओं के अधिकारों के लिए संघर्ष किया। उनकी दलीय राजनीति सिद्धांतनिष्ठा एवं सामाजिक प्रतिबद्धता पर आधारित थी।

लक्ष्मी की दलीय राजनीति में एक विशेष आदर्शवाद था। उन्होंने राजनीति को सत्ता-प्राप्ति का नहीं, अपितु सामाजिक सेवा का माध्यम माना। यह आदर्शवाद उनके राजनीतिक जीवन की एक प्रमुख विशेषता थी।

4.3 2002 का राष्ट्रपति चुनाव

2002 में भारत के राष्ट्रपति पद के चुनाव में कैप्टन लक्ष्मी सहगल को चार वामपंथी दलों—भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी), क्रांतिकारी समाजवादी पार्टी एवं फॉरवर्ड ब्लॉक—ने अपना संयुक्त उम्मीदवार बनाया।[12]
लक्ष्मी डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के विरुद्ध एकमात्र प्रतिद्वंद्वी थीं। यद्यपि इस चुनाव में डॉ. कलाम की विजय हुई, तथापि 88 वर्ष की आयु में राष्ट्रपति पद के लिए चुनाव लड़ना लक्ष्मी की अदम्य ऊर्जा एवं प्रतिबद्धता का प्रमाण था।

---

[9]गीता रामास्वामी, कैप्टन लक्ष्मी: ए लाइफ, नवयाना, हैदराबाद, 2013, पृष्ठ 166।
[10]गीता रामास्वामी, कैप्टन लक्ष्मी: ए लाइफ, नवयाना, हैदराबाद, 2013, पृष्ठ 167।
[11]गीता रामास्वामी, कैप्टन लक्ष्मी: ए लाइफ, नवयाना, हैदराबाद, 2013, पृष्ठ 168।
[12]गीता रामास्वामी, कैप्टन लक्ष्मी: ए लाइफ, नवयाना, हैदराबाद, 2013, पृष्ठ 210।

लक्ष्मी की उम्मीदवारी वंचितों एवं हाशिए पर पड़े वर्गों की आवाज का प्रतीक थी। उन्होंने इस चुनाव को सामाजिक न्याय एवं प्रगतिशील मूल्यों के प्रचार का एक अवसर बनाया। उनकी उम्मीदवारी ने यह संदेश दिया कि राजनीति सामाजिक परिवर्तन का माध्यम है।

4.4 संसदीय कार्यशैली एवं प्राथमिकताएँ

कैप्टन लक्ष्मी सहगल की संसदीय कार्यशैली सामाजिक मुद्दों पर केंद्रित थी। उन्होंने संसद में वंचित वर्गों के मुद्दों को प्रमुखता से उठाया एवं उनके समाधान के लिए नीतिगत सुझाव दिए।[13]

लक्ष्मी की संसदीय प्राथमिकताएँ जनस्वास्थ्य, महिला अधिकार एवं श्रमिक कल्याण थीं। एक चिकित्सक के रूप में उन्होंने जनस्वास्थ्य के मुद्दों पर विशेष ध्यान दिया।

लक्ष्मी की संसदीय कार्यशैली उनकी सामाजिक प्रतिबद्धता का प्रमाण थी। उन्होंने संसद को सामाजिक परिवर्तन एवं वंचितों की सेवा का एक मंच बनाया। यह कार्यशैली उनके राजनीतिक आदर्श का प्रतिबिंब थी।

4.5 दलीय राजनीति में सिद्धांतनिष्ठा

कैप्टन लक्ष्मी सहगल की दलीय राजनीति में एक उल्लेखनीय सिद्धांतनिष्ठा थी। उन्होंने पार्टी की विचारधारा एवं आदर्शों के प्रति पूर्ण निष्ठा बनाए रखी।[14]

लक्ष्मी ने दलीय राजनीति में कभी अवसरवाद का सहारा नहीं लिया। उन्होंने अपने सिद्धांतों एवं विचारधारा पर अडिग रहकर राजनीति की। यह सिद्धांतनिष्ठा उनके दलीय राजनीतिक जीवन की एक विशेषता थी।

इस प्रकार लक्ष्मी की दलीय राजनीति सिद्धांतनिष्ठा एवं वैचारिक प्रतिबद्धता का एक आदर्श उदाहरण थी। यह आज की दलीय राजनीति के लिए एक मार्गदर्शक है।

5. सामाजिक संघर्ष एवं सक्रियता

5.1 महिला अधिकारों के लिए संघर्ष

1981 में अखिल भारतीय जनवादी महिला संघ की संस्थापक सदस्य के रूप में कैप्टन लक्ष्मी सहगल ने महिला अधिकारों के लिए संगठित संघर्ष किया। इस संगठन ने महिलाओं की शिक्षा, स्वास्थ्य एवं आर्थिक स्वतंत्रता के लिए कार्य किया।[15]

लक्ष्मी ने महिलाओं के विरुद्ध होने वाली हिंसा, दहेज प्रथा एवं लैंगिक भेदभाव के विरुद्ध आवाज उठाई। उन्होंने महिलाओं को शिक्षित एवं आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने पर विशेष बल दिया।

1996 में बैंगलोर में विश्व सुंदरी प्रतियोगिता के विरुद्ध प्रदर्शन में भाग लेने के कारण लक्ष्मी को गिरफ्तार किया गया। 82 वर्ष की आयु में अपने सिद्धांतों के लिए गिरफ्तारी देना उनकी अदम्य प्रतिबद्धता का प्रमाण था।[16]

5.2 श्रमिक आंदोलन में भागीदारी

कानपुर एक प्रमुख औद्योगिक नगर था, जहाँ श्रमिक वर्ग की समस्याएँ गंभीर थीं। कैप्टन लक्ष्मी सहगल ने इन श्रमिकों की समस्याओं को समझा एवं उनके अधिकारों के लिए संघर्ष किया। उन्होंने श्रमिक आंदोलनों में सक्रिय भागीदारी की।[17]

लक्ष्मी का श्रमिक-कार्य उनकी मार्क्सवादी विचारधारा एवं सामाजिक न्याय के आदर्श का व्यावहारिक अनुप्रयोग था। उन्होंने श्रमिकों के शोषण को सामाजिक अन्याय माना एवं इसके विरुद्ध संघर्ष किया।

लक्ष्मी ने श्रमिकों की चिकित्सा सेवा के साथ-साथ उनके अधिकारों के लिए भी संघर्ष किया। उन्होंने श्रमिकों के बेहतर वेतन, कार्य-परिस्थितियों एवं सामाजिक सुरक्षा के लिए आवाज उठाई। यह श्रमिक कल्याण का कार्य उनकी सामाजिक प्रतिबद्धता का प्रमाण था।

---

[13]गीता रामास्वामी, कैप्टन लक्ष्मी: ए लाइफ, नवयाना, हैदराबाद, 2013, पृष्ठ 169।
[14]गीता रामास्वामी, कैप्टन लक्ष्मी: ए लाइफ, नवयाना, हैदराबाद, 2013, पृष्ठ 169।
[15]लक्ष्मी सहगल, ए रेवोल्यूशनरी लाइफ, काली फॉर वीमेन, नई दिल्ली, 1997, पृष्ठ 241।
[16]लक्ष्मी सहगल, ए रेवोल्यूशनरी लाइफ, काली फॉर वीमेन, नई दिल्ली, 1997, पृष्ठ 268।
[17]गीता रामास्वामी, कैप्टन लक्ष्मी: ए लाइफ, नवयाना, हैदराबाद, 2013, पृष्ठ 148।

5.3 मानवीय सेवा एवं आपदा राहत

कैप्टन लक्ष्मी सहगल की मानवीय सेवा का एक प्रमुख आयाम आपदा राहत कार्य था। 1971 के बांग्लादेश शरणार्थी संकट के दौरान उन्होंने कलकत्ता में शरणार्थियों की निःस्वार्थ सेवा की।[18]

दिसंबर 1984 में भोपाल गैस त्रासदी के पश्चात 70 वर्ष की आयु में लक्ष्मी ने एक चिकित्सा दल के साथ भोपाल पहुँचकर पीड़ितों की सेवा की। यह उनकी अदम्य सेवा-भावना का प्रमाण था।[19]

लक्ष्मी की मानवीय सेवा उनकी राजनीतिक विचारधारा का एक अभिन्न अंग थी। उनके लिए राजनीति एवं सामाजिक सेवा परस्पर जुड़े हुए थे। उनका मानना था कि राजनीति का उद्देश्य मानवता की सेवा एवं सामाजिक न्याय की प्राप्ति है।

5.4 सामाजिक संघर्ष का एकीकृत दृष्टिकोण

कैप्टन लक्ष्मी सहगल के सामाजिक संघर्ष की एक विशेषता इसका एकीकृत दृष्टिकोण था। उन्होंने विभिन्न सामाजिक मुद्दों—महिला अधिकार, श्रमिक कल्याण, साम्प्रदायिक सद्भाव एवं जनस्वास्थ्य—को परस्पर जुड़ा हुआ माना।[20]

लक्ष्मी का मानना था कि सामाजिक न्याय एक अविभाज्य आदर्श है। उन्होंने इन सभी मुद्दों को एक व्यापक सामाजिक न्याय के संघर्ष का अंग माना। यह एकीकृत दृष्टिकोण उनके सामाजिक संघर्ष की एक प्रमुख विशेषता थी।

इस एकीकृत दृष्टिकोण ने लक्ष्मी के सामाजिक संघर्ष को एक व्यापक एवं समावेशी चरित्र प्रदान किया। उन्होंने समाज के सभी वंचित वर्गों के अधिकारों के लिए एक साथ संघर्ष किया। यह व्यापकता उनके संघर्ष की एक विशेषता थी।

6. धर्मनिरपेक्षता एवं साम्प्रदायिक सद्भाव

6.1 धर्मनिरपेक्ष आदर्श

कैप्टन लक्ष्मी सहगल के राजनीतिक जीवन का एक केंद्रीय तत्व धर्मनिरपेक्षता थी। यह आदर्श आजाद हिन्द फौज की विचारधारा से उत्पन्न हुआ एवं उनके संपूर्ण राजनीतिक जीवन का मार्गदर्शक सिद्धांत बना।[21]

लक्ष्मी का दृढ़ विश्वास था कि भारत की एकता एवं अखंडता धर्मनिरपेक्षता के सिद्धांत पर आधारित है। उन्होंने जीवन भर साम्प्रदायिकता एवं धार्मिक कट्टरता का विरोध किया।

लक्ष्मी की धर्मनिरपेक्षता केवल सैद्धांतिक नहीं, अपितु व्यावहारिक थी। उन्होंने अपने चिकित्सकीय एवं सामाजिक कार्यों में सभी धर्मों के लोगों की समान रूप से सेवा की। उनके लिए मानवता ही सर्वोच्च धर्म था।

6.2 साम्प्रदायिकता के विरुद्ध संघर्ष

1984 में इंदिरा गांधी की हत्या के पश्चात हुए सिख-विरोधी दंगों के दौरान लक्ष्मी ने कानपुर में साम्प्रदायिक सद्भाव की पुनर्स्थापना के लिए अथक परिश्रम किया। उन्होंने दंगा-प्रभावित परिवारों की सहायता की।[22]

लक्ष्मी का मानना था कि साम्प्रदायिकता न केवल राष्ट्रीय एकता, अपितु सामाजिक न्याय एवं प्रगति के लिए भी हानिकारक है। अतः उन्होंने साम्प्रदायिक सद्भाव को अपने राजनीतिक एवं सामाजिक संघर्ष का एक प्रमुख लक्ष्य बनाया।

लक्ष्मी का धर्मनिरपेक्ष आदर्श उनकी वामपंथी विचारधारा से भी जुड़ा था। मार्क्सवादी विचारधारा धर्मनिरपेक्षता एवं सामाजिक समानता पर बल देती है। लक्ष्मी ने इस आदर्श को अपने जीवन में मूर्त रूप दिया।

6.3 धर्मनिरपेक्षता एवं वामपंथ का समन्वय

कैप्टन लक्ष्मी सहगल के राजनीतिक जीवन में धर्मनिरपेक्षता एवं वामपंथ का एक स्वाभाविक समन्वय था। मार्क्सवादी विचारधारा धर्मनिरपेक्षता एवं सामाजिक समानता पर बल देती है, जो लक्ष्मी के धर्मनिरपेक्ष आदर्श के अनुरूप था।[23]

---

[18]गीता रामास्वामी, कैप्टन लक्ष्मी: ए लाइफ, नवयाना, हैदराबाद, 2013, पृष्ठ 178।
[19]गीता रामास्वामी, कैप्टन लक्ष्मी: ए लाइफ, नवयाना, हैदराबाद, 2013, पृष्ठ 192।
[20]गीता रामास्वामी, कैप्टन लक्ष्मी: ए लाइफ, नवयाना, हैदराबाद, 2013, पृष्ठ 170।
[21]बिपिन चंद्र, इंडियाज़ स्ट्रगल फॉर इंडिपेंडेंस, पेंगुइन बुक्स, नई दिल्ली, 1989, पृष्ठ 472।
[22]गीता रामास्वामी, कैप्टन लक्ष्मी: ए लाइफ, नवयाना, हैदराबाद, 2013, पृष्ठ 198।
[23]बिपिन चंद्र, इंडियाज़ स्ट्रगल फॉर इंडिपेंडेंस, पेंगुइन बुक्स, नई दिल्ली, 1989, पृष्ठ 475।

लक्ष्मी ने धर्मनिरपेक्षता को सामाजिक न्याय के व्यापक संघर्ष का एक अभिन्न अंग माना। उनके लिए साम्प्रदायिकता एवं सामाजिक असमानता परस्पर जुड़ी हुई समस्याएँ थीं, जिनके विरुद्ध एक साथ संघर्ष आवश्यक था।

इस प्रकार लक्ष्मी का धर्मनिरपेक्ष आदर्श एवं वामपंथी विचारधारा परस्पर पूरक थे। दोनों सामाजिक समानता एवं न्याय के आदर्श पर आधारित थे। यह समन्वय उनके राजनीतिक जीवन की एक प्रमुख विशेषता थी।

7. राजनीतिक विरासत

7.1 पुत्री सुभाषिनी अली एवं विचारधारा की निरंतरता

लक्ष्मी की पुत्री सुभाषिनी अली ने अपनी माता की राजनीतिक विरासत को आगे बढ़ाया। वे भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) की एक प्रमुख नेता बनीं एवं 1989 में कानपुर से लोकसभा की सदस्य निर्वाचित हुईं।[24]

इस प्रकार लक्ष्मी की प्रगतिशील विचारधारा एवं सामाजिक प्रतिबद्धता की विरासत उनकी पुत्री के माध्यम से अगली पीढ़ी तक पहुँची। यह उल्लेखनीय है कि लक्ष्मी ने जिन मूल्यों को जीवन भर धारण किया, उन्हीं को उनकी पुत्री ने भी आत्मसात किया।

विचारधारा की यह निरंतरता लक्ष्मी की विरासत का एक महत्वपूर्ण पक्ष है। उनके मूल्य एवं आदर्श उनके परिवार एवं उनके अनुयायियों के माध्यम से जीवित रहे। यह उनकी विचारधारा की प्रबलता का प्रमाण है।

7.2 सिद्धांतनिष्ठ राजनीति का आदर्श

कैप्टन लक्ष्मी सहगल का राजनीतिक जीवन सिद्धांतनिष्ठ राजनीति का एक आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करता है। उन्होंने यह सिद्ध किया कि राजनीति को सेवा एवं सामाजिक परिवर्तन का माध्यम बनाया जा सकता है।[25]

लक्ष्मी ने कभी अपने सिद्धांतों के साथ समझौता नहीं किया, चाहे परिस्थितियाँ कितनी भी प्रतिकूल क्यों न हों। यह सिद्धांतनिष्ठा उनके राजनीतिक जीवन की एक प्रमुख विशेषता थी।

लक्ष्मी का राजनीतिक जीवन यह सिखाता है कि सच्ची सफलता सिद्धांतों के साथ समझौता करने में नहीं, अपितु उन पर अडिग रहने में है। उनका राजनीतिक आदर्श आज की राजनीति के लिए एक मार्गदर्शक है।

7.3 समकालीन प्रासंगिकता

कैप्टन लक्ष्मी सहगल की राजनीतिक विरासत आज भी प्रासंगिक है। उनका सामाजिक न्याय, धर्मनिरपेक्षता एवं नारी सशक्तीकरण का आदर्श आज भी उतना ही महत्वपूर्ण है, जितना उनके जीवनकाल में था।[26]

लक्ष्मी का राजनीतिक जीवन आज के राजनेताओं के लिए एक आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करता है। यह सिखाता है कि राजनीति को व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा के स्थान पर सामाजिक सेवा का माध्यम बनाया जा सकता है।

इस प्रकार कैप्टन लक्ष्मी सहगल की राजनीतिक विरासत एक मूल्यवान धरोहर है। यह सिद्धांतनिष्ठ, सेवा-प्रेरित एवं प्रगतिशील राजनीति का एक आदर्श प्रस्तुत करती है, जो आने वाली पीढ़ियों को सदैव प्रेरित करती रहेगी।

7.4 विरासत का संरक्षण एवं प्रसार

कैप्टन लक्ष्मी सहगल की राजनीतिक विरासत का संरक्षण एवं प्रसार एक महत्वपूर्ण कार्य है। उनका जीवन एवं आदर्श आज की पीढ़ी के लिए एक मूल्यवान प्रेरणा हैं।[27]

लक्ष्मी की विरासत विभिन्न रूपों में संरक्षित है। उनके जीवन पर पुस्तकें, लेख एवं शोध-कार्य उपलब्ध हैं। प्रस्तुत शोध-पत्र भी इसी संरक्षण-प्रयास का अंग है।

इस विरासत का प्रसार आज की पीढ़ी, विशेषकर युवाओं एवं महिलाओं, को सिद्धांतनिष्ठ राजनीति एवं सामाजिक सेवा का संदेश देगा। यह एक मूल्यवान सामाजिक एवं शैक्षिक कार्य है।

---

[24]लक्ष्मी सहगल, ए रेवोल्यूशनरी लाइफ, काली फॉर वीमेन, नई दिल्ली, 1997, पृष्ठ 201।
[25]गीता रामास्वामी, कैप्टन लक्ष्मी: ए लाइफ, नवयाना, हैदराबाद, 2013, पृष्ठ 218।
[26]गीता रामास्वामी, कैप्टन लक्ष्मी: ए लाइफ, नवयाना, हैदराबाद, 2013, पृष्ठ 230।
[27]गीता रामास्वामी, कैप्टन लक्ष्मी: ए लाइफ, नवयाना, हैदराबाद, 2013, पृष्ठ 235।

8. ऐतिहासिक एवं तुलनात्मक संदर्भ

कैप्टन लक्ष्मी सहगल के राजनीतिक जीवन को उसके व्यापक ऐतिहासिक एवं तुलनात्मक संदर्भ में समझना उपयोगी है। इस अध्याय में उनके राजनीतिक जीवन का ऐतिहासिक संदर्भ एवं अन्य नेताओं के साथ तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

8.1 स्वातंत्र्योत्तर भारतीय राजनीति का संदर्भ

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारतीय राजनीति एक नवीन चरण में प्रवेश कर गई। राष्ट्र-निर्माण, सामाजिक न्याय एवं आर्थिक विकास के मुद्दे केंद्रीय बन गए। इस संदर्भ में कैप्टन लक्ष्मी सहगल ने अपना राजनीतिक जीवन आरंभ किया।[28]

इस काल में भारतीय राजनीति में विभिन्न विचारधाराएँ सक्रिय थीं। कांग्रेस की मध्यमार्गी विचारधारा, वामपंथी समाजवादी विचारधारा एवं अन्य धाराएँ इस राजनीतिक परिदृश्य का अंग थीं। लक्ष्मी ने वामपंथी विचारधारा का मार्ग चुना।

स्वातंत्र्योत्तर भारत में सामाजिक एवं आर्थिक असमानता एक गंभीर समस्या थी। लक्ष्मी ने इस असमानता के विरुद्ध संघर्ष को अपना राजनीतिक लक्ष्य बनाया। उनका राजनीतिक जीवन इसी सामाजिक संदर्भ की उपज था।

8.2 अन्य महिला नेताओं के साथ तुलना

कैप्टन लक्ष्मी सहगल के राजनीतिक जीवन का मूल्यांकन अन्य महिला नेताओं के साथ तुलना से और अधिक स्पष्ट होता है। भारतीय राजनीति में अनेक महिला नेता रही हैं, जिनमें से प्रत्येक का योगदान अपने-अपने ढंग से महत्वपूर्ण था।[29]

लक्ष्मी की एक प्रमुख तुलनात्मक विशिष्टता उनका सेवा-प्रेरित राजनीतिक आदर्श था। जहाँ अनेक नेता सत्ता-केंद्रित राजनीति करते हैं, वहीं लक्ष्मी ने राजनीति को सामाजिक सेवा का माध्यम बनाया।

लक्ष्मी की द्वितीय तुलनात्मक विशिष्टता उनकी वैचारिक दृढ़ता थी। उन्होंने जीवन भर अपने वामपंथी सिद्धांतों पर अडिग रहकर संघर्ष किया। यह वैचारिक दृढ़ता उन्हें अन्य नेताओं से अलग करती थी।

8.3 तुलनात्मक अध्ययन का निष्कर्ष

तुलनात्मक अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि कैप्टन लक्ष्मी सहगल का राजनीतिक जीवन अपनी सिद्धांतनिष्ठा, सेवा-भावना एवं वैचारिक दृढ़ता के कारण उल्लेखनीय है। वे भारतीय राजनीति की एक अद्वितीय विभूति थीं।[30]

यह तुलनात्मक अध्ययन किसी एक नेता को दूसरे से श्रेष्ठ सिद्ध करने का प्रयास नहीं है। प्रत्येक नेता का योगदान अपने-अपने संदर्भ में महत्वपूर्ण था। यह अध्ययन केवल लक्ष्मी के राजनीतिक जीवन की विशिष्टताओं को स्पष्ट करता है।

इस प्रकार ऐतिहासिक एवं तुलनात्मक संदर्भ में कैप्टन लक्ष्मी सहगल का राजनीतिक जीवन एक विशिष्ट एवं प्रेरणादायक उदाहरण प्रस्तुत करता है। यह सिद्धांतनिष्ठ एवं सेवा-प्रेरित राजनीति का एक आदर्श है।

9. विश्लेषणात्मक परिप्रेक्ष्य

कैप्टन लक्ष्मी सहगल के राजनीतिक जीवन को विभिन्न विश्लेषणात्मक परिप्रेक्ष्यों से समझा जा सकता है। इस अध्याय में उनके राजनीतिक जीवन का वैचारिक, सामाजिक एवं नारीवादी परिप्रेक्ष्य से विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

9.1 वैचारिक परिप्रेक्ष्य

वैचारिक परिप्रेक्ष्य से कैप्टन लक्ष्मी सहगल का राजनीतिक जीवन एक सुसंगत वैचारिक विकास का उदाहरण है। उनकी वैचारिक यात्रा में एक उल्लेखनीय निरंतरता एवं तार्किकता थी।[31]

लक्ष्मी की विचारधारा का मूल सामाजिक न्याय एवं समानता का आदर्श था। यह आदर्श उनकी संपूर्ण वैचारिक यात्रा में अपरिवर्तित रहा। केवल इस आदर्श की प्राप्ति के मार्ग के संबंध में उनके विचार विकसित होते रहे।

इस प्रकार वैचारिक परिप्रेक्ष्य से लक्ष्मी का राजनीतिक जीवन एक सुसंगत एवं सिद्धांतनिष्ठ वैचारिक विकास का प्रतिनिधित्व करता है। यह वैचारिक निरंतरता उनके व्यक्तित्व की एक प्रमुख विशेषता थी।

---

[28]बिपिन चंद्र, इंडियाज़ स्ट्रगल फॉर इंडिपेंडेंस, पेंगुइन बुक्स, नई दिल्ली, 1989, पृष्ठ 490।
[29]गीता रामास्वामी, कैप्टन लक्ष्मी: ए लाइफ, नवयाना, हैदराबाद, 2013, पृष्ठ 226।
[30]गीता रामास्वामी, कैप्टन लक्ष्मी: ए लाइफ, नवयाना, हैदराबाद, 2013, पृष्ठ 228।
[31]गीता रामास्वामी, कैप्टन लक्ष्मी: ए लाइफ, नवयाना, हैदराबाद, 2013, पृष्ठ 165।

9.2 नारीवादी परिप्रेक्ष्य

नारीवादी परिप्रेक्ष्य से कैप्टन लक्ष्मी सहगल का राजनीतिक जीवन अत्यंत महत्वपूर्ण है। एक महिला राजनेता के रूप में उन्होंने राजनीति में महिलाओं की भागीदारी का एक प्रेरक उदाहरण प्रस्तुत किया।[32]

लक्ष्मी ने महिला अधिकारों एवं सशक्तीकरण को अपने राजनीतिक संघर्ष का एक प्रमुख लक्ष्य बनाया। उनका नारीवाद उनकी वामपंथी विचारधारा से जुड़ा था, जो महिलाओं की मुक्ति को सामाजिक एवं आर्थिक मुक्ति से जोड़ता था।

इस प्रकार नारीवादी परिप्रेक्ष्य से लक्ष्मी का राजनीतिक जीवन महिलाओं की राजनीतिक भा गीदारी एवं नारी सशक्तीकरण का एक प्रेरक उदाहरण है। यह आज की महिलाओं के लिए विशेष रूप से प्रेरणादायक है।

9.3 सामाजिक परिप्रेक्ष्य

सामाजिक परिप्रेक्ष्य से कैप्टन लक्ष्मी सहगल का राजनीतिक जीवन सामाजिक परिवर्तन के लिए समर्पित था। उन्होंने राजनीति को सामाजिक न्याय एवं परिवर्तन का माध्यम बनाया।[33]

लक्ष्मी ने समाज के विभिन्न वंचित वर्गों—महिलाओं, श्रमिकों एवं अल्पसंख्यकों—के अधिकारों के लिए संघर्ष किया। उनका सामाजिक संघर्ष व्यापक एवं समावेशी था।

इस प्रकार सामाजिक परिप्रेक्ष्य से लक्ष्मी का राजनीतिक जीवन सामाजिक परिवर्तन एवं न्याय के लिए एक आजीवन संघर्ष था। यह सामाजिक प्रतिबद्धता उनके राजनीतिक जीवन की मूल भावना थी।

10. लक्ष्मी सहगल एवं भारतीय वामपंथ

कैप्टन लक्ष्मी सहगल भारतीय वामपंथी राजनीति की एक प्रमुख विभूति थीं। इस अध्याय में उनके भारतीय वामपंथ में योगदान एवं स्थान का विवेचन प्रस्तुत किया गया है।

10.1 भारतीय वामपंथ का इतिहास

भारतीय वामपंथ का इतिहास स्वतंत्रता संग्राम से जुड़ा है। वामपंथी आंदोलन ने सामाजिक एवं आर्थिक समानता, श्रमिक अधिकार एवं सामाजिक न्याय के लिए संघर्ष किया। यह आंदोलन भारतीय राजनीति की एक महत्वपूर्ण धारा रहा है।[34]

कैप्टन लक्ष्मी सहगल इसी वामपंथी परंपरा का अंग थीं। उन्होंने भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) के माध्यम से वामपंथी राजनीति में योगदान दिया। उनका योगदान भारतीय वामपंथ को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण था।

लक्ष्मी का वामपंथ आजाद हिन्द फौज के समाजवादी आदर्शों से जुड़ा था। नेताजी की समाजवादी विचारधारा एवं भारतीय वामपंथ के मध्य एक वैचारिक संबंध था, जिसे लक्ष्मी ने अपने जीवन में मूर्त रूप दिया।

10.2 वामपंथ में लक्ष्मी का योगदान

कैप्टन लक्ष्मी सहगल का भारतीय वामपंथ में योगदान बहुआयामी था। उन्होंने वामपंथी विचारधारा को सामाजिक सेवा एवं मानवीय करुणा से जोड़ा। उनका वामपंथ केवल सैद्धांतिक नहीं, अपितु व्यावहारिक था।[35]

लक्ष्मी ने वामपंथी राजनीति में नारी सशक्तीकरण के मुद्दे को प्रमुखता दी। उन्होंने महिलाओं के अधिकारों को वामपंथी आंदोलन का एक अभिन्न अंग बनाया। यह योगदान भारतीय वामपंथ को समृद्ध करने वाला था।

लक्ष्मी ने वामपंथी राजनीति में एक नैतिक एवं आदर्शवादी आयाम जोड़ा। उनका वामपंथ सिद्धांतनिष्ठा एवं सेवा-भावना पर आधारित था। यह नैतिक आयाम उनके वामपंथी योगदान की एक विशेषता थी।

10.3 वामपंथ में नारी नेतृत्व

कैप्टन लक्ष्मी सहगल भारतीय वामपंथ में नारी नेतृत्व का एक प्रमुख उदाहरण थीं। एक महिला नेता के रूप में उन्होंने वामपंथी राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।[36]

---

[32]गीता रामास्वामी, कैप्टन लक्ष्मी: ए लाइफ, नवयाना, हैदराबाद, 2013, पृष्ठ 210।
[33]गीता रामास्वामी, कैप्टन लक्ष्मी: ए लाइफ, नवयाना, हैदराबाद, 2013, पृष्ठ 168।
[34]सुमित सरकार, मॉडर्न इंडिया, मैकमिलन, नई दिल्ली, 1983, पृष्ठ 270।
[35]गीता रामास्वामी, कैप्टन लक्ष्मी: ए लाइफ, नवयाना, हैदराबाद, 2013, पृष्ठ 220।

लक्ष्मी का नारी नेतृत्व वामपंथी आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी का एक प्रेरक उदाहरण था। उन्होंने यह सिद्ध किया कि महिलाएँ राजनीतिक नेतृत्व के क्षेत्र में भी सक्षम हैं।

इस प्रकार कैप्टन लक्ष्मी सहगल भारतीय वामपंथ की एक प्रमुख विभूति थीं। उनका योगदान वामपंथी विचारधारा एवं आंदोलन को समृद्ध करने वाला था। उनका नारी नेतृत्व भारतीय वामपंथ के इतिहास का एक गौरवशाली अध्याय है।

11. परिचर्चा : राजनीतिक जीवन का समग्र मूल्यांकन

कैप्टन लक्ष्मी सहगल के राजनीतिक जीवन के विभिन्न पक्षों के अध्ययन के पश्चात इसका समग्र मूल्यांकन आवश्यक है। इस अध्याय में उनके राजनीतिक जीवन का समेकित मूल्यांकन प्रस्तुत किया गया है।

11.1 राजनीतिक जीवन की विशिष्टताएँ

कैप्टन लक्ष्मी सहगल के राजनीतिक जीवन की अनेक विशिष्टताएँ थीं। प्रथम, उनका राजनीतिक जीवन सत्ता-प्राप्ति की महत्वाकांक्षा से नहीं, अपितु सामाजिक सेवा की भावना से प्रेरित था।[37]

द्वितीय, उनके राजनीतिक जीवन में एक उल्लेखनीय सिद्धांतनिष्ठा एवं निरंतरता थी। उन्होंने कभी अपने सिद्धांतों के साथ समझौता नहीं किया। तृतीय, उनका राजनीतिक जीवन उनकी असाधारण अवधि एवं सक्रियता के लिए उल्लेखनीय था।

इन विशिष्टताओं ने कैप्टन लक्ष्मी सहगल को भारतीय राजनीति की एक अद्वितीय विभूति बनाया। उनका राजनीतिक जीवन सिद्धांतनिष्ठ एवं सेवा-प्रेरित राजनीति का एक आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करता है।

11.2 आजाद हिन्द फौज से निरंतरता

कैप्टन लक्ष्मी सहगल का राजनीतिक जीवन आजाद हिन्द फौज के आदर्शों की एक तार्किक निरंतरता था। आजाद हिन्द फौज के समतावादी, धर्मनिरपेक्ष एवं समाजवादी आदर्श उनके राजनीतिक जीवन में परिलक्षित होते हैं।[38]

लक्ष्मी ने आजाद हिन्द फौज में जिन आदर्शों के लिए संघर्ष किया, उन्हीं को उन्होंने स्वतंत्र भारत में अपने राजनीतिक जीवन के माध्यम से आगे बढ़ाया। यह निरंतरता उनके जीवन की एकसूत्रता का प्रमाण थी।

इस प्रकार लक्ष्मी का राजनीतिक जीवन उनके संपूर्ण जीवन-संघर्ष का एक अभिन्न अंग था। यह स्वतंत्रता संग्राम से लेकर स्वतंत्रता-पश्चात के सामाजिक संघर्ष तक एक सुसंगत निरंतरता का प्रतिनिधित्व करता है।

11.3 राजनीतिक आदर्श का महत्व

कैप्टन लक्ष्मी सहगल का राजनीतिक आदर्श आज विशेष रूप से प्रासंगिक है। एक ऐसे युग में, जब राजनीति प्रायः सत्ता एवं स्वार्थ से प्रेरित प्रतीत होती है, लक्ष्मी का सेवा-प्रेरित एवं सिद्धांतनिष्ठ राजनीतिक आदर्श एक प्रेरणा प्रस्तुत करता है।[39]

लक्ष्मी का राजनीतिक जीवन यह सिद्ध करता है कि राजनीति को सामाजिक सेवा एवं परिवर्तन का माध्यम बनाया जा सकता है। यह आदर्श आज के राजनेताओं एवं नागरिकों के लिए एक मार्गदर्शक है।

इस प्रकार कैप्टन लक्ष्मी सहगल का राजनीतिक आदर्श एक मूल्यवान धरोहर है। यह सिद्धांतनिष्ठ, सेवा-प्रेरित एवं प्रगतिशील राजनीति का एक आदर्श प्रस्तुत करता है, जो आने वाली पीढ़ियों को सदैव प्रेरित करता रहेगा।

12. निहितार्थ एवं संस्तुतियाँ

कैप्टन लक्ष्मी सहगल के राजनीतिक जीवन के अध्ययन से अनेक निहितार्थ निकलते हैं। इस अध्याय में इन निहितार्थों एवं संस्तुतियों का विवेचन प्रस्तुत किया गया है।

12.1 राजनीतिक संस्कृति के लिए निहितार्थ

कैप्टन लक्ष्मी सहगल का राजनीतिक जीवन समकालीन राजनीतिक संस्कृति के लिए महत्वपूर्ण निहितार्थ रखता है। यह सिद्धांतनिष्ठ एवं सेवा-प्रेरित राजनीति के महत्व को रेखांकित करता है।[40]

---

[36]गीता रामास्वामी, कैप्टन लक्ष्मी: ए लाइफ, नवयाना, हैदराबाद, 2013, पृष्ठ 222।
[37]गीता रामास्वामी, कैप्टन लक्ष्मी: ए लाइफ, नवयाना, हैदराबाद, 2013, पृष्ठ 218।
[38]सुगाता बोस, हिज़ मैजेस्टीज़ ऑपोनेंट, हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, कैम्ब्रिज, 2011, पृष्ठ 295।
[39]गीता रामास्वामी, कैप्टन लक्ष्मी: ए लाइफ, नवयाना, हैदराबाद, 2013, पृष्ठ 230।

लक्ष्मी का उदाहरण यह दर्शाता है कि राजनीति को व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा के स्थान पर सामाजिक सेवा का माध्यम बनाया जा सकता है। यह आदर्श समकालीन राजनीतिक संस्कृति के लिए एक मार्गदर्शक है।

इस प्रकार लक्ष्मी का राजनीतिक जीवन एक स्वस्थ एवं नैतिक राजनीतिक संस्कृति की आवश्यकता को रेखांकित करता है, जिसमें सेवा एवं सिद्धांतनिष्ठा को प्राथमिकता दी जाए।

12.2 नारी राजनीतिक भागीदारी के लिए संस्तुतियाँ

कैप्टन लक्ष्मी सहगल का राजनीतिक जीवन नारी राजनीतिक भागीदारी को प्रोत्साहित करने के लिए एक प्रेरणा है। उनका उदाहरण महिलाओं को राजनीति में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित करता है।[41]

महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी लोकतंत्र की गुणवत्ता एवं समावेशिता के लिए आवश्यक है। लक्ष्मी का जीवन इस तथ्य को रेखांकित करता है एवं नारी राजनीतिक भागीदारी को प्रोत्साहित करता है।

इस प्रकार कैप्टन लक्ष्मी सहगल का राजनीतिक जीवन न केवल अकादमिक महत्व रखता है, अपितु इसका सामाजिक एवं राजनीतिक महत्व भी है। यह आज की पीढ़ी को सिद्धांतनिष्ठ राजनीति एवं नारी राजनीतिक भागीदारी का संदेश देता है।

11.4 राजनीति एवं नैतिकता का समन्वय

कैप्टन लक्ष्मी सहगल के राजनीतिक जीवन की एक प्रमुख विशेषता राजनीति एवं नैतिकता का समन्वय थी। उन्होंने राजनीति को नैतिक मूल्यों से जोड़ा एवं सिद्धांतनिष्ठ राजनीति का आदर्श प्रस्तुत किया।[42]

लक्ष्मी का मानना था कि राजनीति नैतिक मूल्यों से रहित नहीं होनी चाहिए। उन्होंने राजनीति में ईमानदारी, सेवा एवं सिद्धांतनिष्ठा के मूल्यों को प्राथमिकता दी।

इस प्रकार लक्ष्मी का राजनीतिक जीवन राजनीति एवं नैतिकता के समन्वय का एक आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करता है। यह आज की राजनीति के लिए विशेष रूप से प्रासंगिक एवं प्रेरणादायक है।

12क. समकालीन प्रासंगिकता एवं संदेश

कैप्टन लक्ष्मी सहगल का राजनीतिक जीवन एवं वामपंथी विचारधारा समकालीन भारत में अत्यंत प्रासंगिक हैं। इस अध्याय में उनकी समकालीन प्रासंगिकता एवं संदेश का विवेचन प्रस्तुत किया गया है।

समकालीन राजनीति के लिए प्रासंगिकता

आज जब राजनीति प्रायः सत्ता एवं स्वार्थ से प्रेरित प्रतीत होती है, कैप्टन लक्ष्मी सहगल का सेवा-प्रेरित राजनीतिक आदर्श विशेष रूप से प्रासंगिक है। उनका जीवन यह सिद्ध करता है कि राजनीति को सामाजिक सेवा का माध्यम बनाया जा सकता है।[43]

लक्ष्मी का सामाजिक न्याय, धर्मनिरपेक्षता एवं नारी सशक्तीकरण का आदर्श आज भी उतना ही महत्वपूर्ण है, जितना उनके जीवनकाल में था। यह आदर्श समकालीन भारत के निर्माण के लिए मार्गदर्शक है।

इस प्रकार कैप्टन लक्ष्मी सहगल का राजनीतिक जीवन समकालीन राजनीति के लिए एक प्रेरणा प्रस्तुत करता है। यह सिद्धांतनिष्ठ, सेवा-प्रेरित एवं प्रगतिशील राजनीति का एक आदर्श है।

युवा पीढ़ी के लिए संदेश

कैप्टन लक्ष्मी सहगल का राजनीतिक जीवन युवा पीढ़ी के लिए अनेक मूल्यवान संदेश प्रस्तुत करता है। यह उन्हें सामाजिक उत्तरदायित्व, सिद्धांतनिष्ठा एवं निःस्वार्थ सेवा का संदेश देता है।[44]

लक्ष्मी का जीवन यह सिखाता है कि एक व्यक्ति अपने दृढ़ संकल्प एवं सामाजिक प्रतिबद्धता से समाज में महत्वपूर्ण परिवर्तन ला सकता है। यह संदेश युवा पीढ़ी के लिए विशेष रूप से प्रेरणादायक है।

---

[40]गीता रामास्वामी, कैप्टन लक्ष्मी: ए लाइफ, नवयाना, हैदराबाद, 2013, पृष्ठ 235।
[41]गीता रामास्वामी, कैप्टन लक्ष्मी: ए लाइफ, नवयाना, हैदराबाद, 2013, पृष्ठ 232।
[42]गीता रामास्वामी, कैप्टन लक्ष्मी: ए लाइफ, नवयाना, हैदराबाद, 2013, पृष्ठ 218।
[43]गीता रामास्वामी, कैप्टन लक्ष्मी: ए लाइफ, नवयाना, हैदराबाद, 2013, पृष्ठ 230।
[44]गीता रामास्वामी, कैप्टन लक्ष्मी: ए लाइफ, नवयाना, हैदराबाद, 2013, पृष्ठ 235।

इस प्रकार कैप्टन लक्ष्मी सहगल का राजनीतिक जीवन एवं वामपंथी विचारधारा आज भी प्रासंगिक एवं प्रेरणादायक हैं। उनका जीवन एवं आदर्श आने वाली पीढ़ियों को सदैव प्रेरित करते रहेंगे।

नारी राजनीतिक भागीदारी का आदर्श

कैप्टन लक्ष्मी सहगल का राजनीतिक जीवन नारी राजनीतिक भागीदारी का एक उत्कृष्ट आदर्श प्रस्तुत करता है। एक महिला राजनेता के रूप में उन्होंने राजनीति के सर्वोच्च स्तर तक अपनी क्षमता सिद्ध की।[45]

लक्ष्मी ने यह सिद्ध किया कि महिलाएँ राजनीतिक नेतृत्व एवं निर्णय-प्रक्रिया में सक्षम भागीदार हैं। उनका राजनीतिक जीवन महिलाओं को राजनीति में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित करता है।

इस प्रकार कैप्टन लक्ष्मी सहगल नारी राजनीतिक भागीदारी की एक प्रेरक प्रतीक हैं। उनका जीवन आज की महिलाओं को राजनीति एवं सार्वजनिक जीवन में सक्रिय भागीदारी का संदेश देता है। यह उनकी एक मूल्यवान विरासत है।

12ख. उपसंहार : एक अमर विरासत

कैप्टन लक्ष्मी सहगल का राजनीतिक जीवन एवं वामपंथी विचारधारा भारतीय राजनीतिक इतिहास की एक अमर विरासत है। इस संक्षिप्त उपसंहार में उनकी विरासत के स्थायी महत्व को रेखांकित किया गया है।

स्थायी महत्व

कैप्टन लक्ष्मी सहगल का राजनीतिक योगदान केवल उनके जीवनकाल तक सीमित नहीं था। उनका योगदान एक स्थायी प्रेरणा बन गया है, जो आज भी प्रासंगिक एवं प्रेरणादायक है।[46]

लक्ष्मी ने सिद्ध किया कि सिद्धांतनिष्ठ एवं सेवा-प्रेरित राजनीति संभव है। यह आदर्श भारतीय राजनीति के लिए एक स्थायी मार्गदर्शक है। उनका जीवन राजनीति में नैतिकता एवं सेवा के महत्व को रेखांकित करता है।

इस प्रकार कैप्टन लक्ष्मी सहगल का राजनीतिक जीवन एवं वामपंथी विचारधारा एक अमर विरासत है। यह विरासत सामाजिक न्याय, धर्मनिरपेक्षता एवं नारी सशक्तीकरण के आदर्शों का प्रतिनिधित्व करती है, जो आने वाली पीढ़ियों को सदैव प्रेरित करते रहेंगे। यही उनकी सर्वाधिक मूल्यवान देन है।

13. स्रोत-सामग्री एवं शोध-पद्धति

किसी भी शोध की प्रामाणिकता उसकी स्रोत-सामग्री एवं पद्धति पर निर्भर करती है। इस अध्याय में प्रस्तुत शोध-पत्र में प्रयुक्त स्रोत-सामग्री एवं शोध-पद्धति का विवेचन प्रस्तुत किया गया है।

13.1 प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोत

प्रस्तुत शोध-पत्र में कैप्टन लक्ष्मी सहगल की आत्मकथा एक प्रमुख प्राथमिक स्रोत के रूप में प्रयुक्त हुई है। यह आत्मकथा उनके जीवन, विचारों एवं अनुभवों का एक प्रत्यक्ष विवरण प्रस्तुत करती है।[47]

द्वितीयक स्रोतों में गीता रामास्वामी का अध्ययन प्रमुख है, जो कैप्टन लक्ष्मी सहगल के जीवन का एक विस्तृत विवरण प्रस्तुत करता है। सुगत बोस एवं अन्य विद्वानों के अध्ययन भी इस शोध के लिए उपयोगी सिद्ध हुए।[48]

इन स्रोतों का आलोचनात्मक विश्लेषण कर निष्कर्ष प्रस्तुत किए गए हैं। विभिन्न स्रोतों की तुलना कर तथ्यों की पुष्टि की गई है, जिससे शोध की प्रामाणिकता सुनिश्चित हो सके।

13.2 शोध-पद्धति एवं सीमाएँ

प्रस्तुत शोध ऐतिहासिक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है। इसमें तथ्यों का संकलन, उनका आलोचनात्मक विश्लेषण एवं निष्कर्ष-निर्धारण की वैज्ञानिक प्रक्रिया का अनुपालन किया गया है।[49]

---

[45]गीता रामास्वामी, कैप्टन लक्ष्मी: ए लाइफ, नवयाना, हैदराबाद, 2013, पृष्ठ 210।
[46]गीता रामास्वामी, कैप्टन लक्ष्मी: ए लाइफ, नवयाना, हैदराबाद, 2013, पृष्ठ 240।
[47]लक्ष्मी सहगल, ए रेवोल्यूशनरी लाइफ, काली फॉर वीमेन, नई दिल्ली, 1997, पृष्ठ 5।
[48]गीता रामास्वामी, कैप्टन लक्ष्मी: ए लाइफ, नवयाना, हैदराबाद, 2013, पृष्ठ 3।
[49]गीता रामास्वामी, कैप्टन लक्ष्मी: ए लाइफ, नवयाना, हैदराबाद, 2013, पृष्ठ 6।

इस शोध की कुछ सीमाएँ भी हैं। कैप्टन लक्ष्मी सहगल के राजनीतिक जीवन के कुछ पक्षों पर अभी विस्तृत अध्ययन शेष है। उनके राजनीतिक भाषणों एवं लेखों का विस्तृत अध्ययन भावी शोध का एक महत्वपूर्ण विषय है।

भावी शोध में मौखिक इतिहास एवं अभिलेखीय स्रोतों का उपयोग इस विषय पर अधिक गहन अध्ययन प्रस्तुत कर सकता है। यह कैप्टन लक्ष्मी सहगल के राजनीतिक जीवन के अध्ययन को और समृद्ध करेगा।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध-पत्र के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि कैप्टन लक्ष्मी सहगल का राजनीतिक जीवन उनके बहुआयामी व्यक्तित्व का एक महत्वपूर्ण पक्ष था। उनका राजनीतिक जीवन आजाद हिन्द फौज के समतावादी आदर्शों की एक तार्किक निरंतरता था।

लक्ष्मी की वैचारिक यात्रा गांधीवाद से क्रांतिकारी राष्ट्रवाद एवं फिर मार्क्सवाद तक की एक सतत प्रक्रिया थी। इस संपूर्ण यात्रा में उनका मूल सूत्र—सामाजिक न्याय एवं वंचितों की सेवा—अपरिवर्तित रहा। यह वैचारिक निरंतरता उनके व्यक्तित्व की एक प्रमुख विशेषता थी।

लक्ष्मी का मार्क्सवाद व्यावहारिक एवं मानवीय था। उन्होंने मार्क्सवाद को केवल एक सिद्धांत नहीं, अपितु सामाजिक परिवर्तन का एक व्यावहारिक माध्यम माना। उनका राजनीतिक जीवन सिद्धांतनिष्ठा, सामाजिक प्रतिबद्धता एवं नैतिक मूल्यों का एक अनुपम उदाहरण था।

लक्ष्मी का राजनीतिक जीवन सत्ता-प्राप्ति की महत्वाकांक्षा से नहीं, अपितु सामाजिक सेवा की भावना से प्रेरित था। उन्होंने राजनीति को वंचितों, श्रमिकों एवं महिलाओं के अधिकारों के लिए संघर्ष का माध्यम बनाया। यह सेवा-प्रेरित राजनीति उनके जीवन की एक विशेषता थी।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि कैप्टन लक्ष्मी सहगल एक असाधारण राजनेता एवं सामाजिक कार्यकर्ता थीं। उनका राजनीतिक जीवन एवं वामपंथी विचारधारा सामाजिक न्याय, धर्मनिरपेक्षता एवं नारी सशक्तीकरण के आदर्शों का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनकी राजनीतिक विरासत एक मूल्यवान धरोहर है, जो आने वाली पीढ़ियों को सदैव प्रेरित करती रहेगी।

इस शोध-पत्र ने कैप्टन लक्ष्मी सहगल के राजनीतिक जीवन के विविध पक्षों—उनकी वैचारिक यात्रा, मार्क्सवादी विचारधारा, संसदीय एवं दलीय राजनीति, सामाजिक संघर्ष, धर्मनिरपेक्ष आदर्श एवं राजनीतिक विरासत—का व्यवस्थित अध्ययन प्रस्तुत किया है। इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि उनका राजनीतिक जीवन एक सुसंगत एवं सिद्धांतनिष्ठ वैचारिक विकास का प्रतिनिधित्व करता है।

लक्ष्मी का राजनीतिक जीवन यह सिद्ध करता है कि स्वतंत्रता संग्राम एवं स्वातंत्र्योत्तर सामाजिक संघर्ष परस्पर जुड़े हुए थे। उन्होंने आजाद हिन्द फौज में जिन आदर्शों के लिए संघर्ष किया, उन्हीं को उन्होंने स्वतंत्र भारत में अपने राजनीतिक जीवन के माध्यम से आगे बढ़ाया। यह निरंतरता उनके जीवन की एकसूत्रता का प्रमाण है।

अंततः यह आशा की जाती है कि प्रस्तुत शोध-पत्र कैप्टन लक्ष्मी सहगल के राजनीतिक जीवन एवं वामपंथी विचारधारा को व्यापक हिन्दीभाषी जनसमुदाय तक पहुँचाएगा एवं इस महत्वपूर्ण विषय पर भावी शोध को प्रेरित करेगा। उनका राजनीतिक जीवन सिद्धांतनिष्ठ एवं सेवा-प्रेरित राजनीति का एक अमर आदर्श है, जो आने वाली पीढ़ियों को सदैव प्रेरित करता रहेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. घोष, के. के., द इंडियन नेशनल आर्मी, मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ, 1969।
2. लेब्रा, जॉयस सी., द रानी ऑफ़ झाँसी रेजिमेंट, इंस्टीट्यूट ऑफ़ साउथईस्ट एशियन स्टडीज़, सिंगापुर, 2008।
3. लेब्रा, जॉयस सी., जापानीज़ ट्रेंड आर्मीज़ इन साउथईस्ट एशिया, हीनेमन, सिंगापुर, 1977।
4. सहगल, लक्ष्मी, ए रेवोल्यूशनरी लाइफ, काली फॉर वीमेन, नई दिल्ली, 1997।
5. रामास्वामी, गीता, कैप्टन लक्ष्मी: ए लाइफ, नवयाना, हैदराबाद, 2013।
6. बोस, सुगाता, हिज़ मैजेस्टीज़ ऑपोनेंट, हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, कैम्ब्रिज, 2011।
7. गॉर्डन, लियोनार्ड ए., ब्रदर्स अगेंस्ट द राज, कोलंबिया यूनिवर्सिटी प्रेस, न्यूयॉर्क, 1990।
8. चंद्र, बिपिन, इंडियाज़ स्ट्रगल फॉर इंडिपेंडेंस, पेंगुइन बुक्स, नई दिल्ली, 1989।
9. सरकार, सुमित, मॉडर्न इंडिया, मैकमिलन, नई दिल्ली, 1983।
10. सरीन, टी. आर., इंडियन नेशनल आर्मी: ए डॉक्यूमेंटरी स्टडी, गयान पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2004।